कुमार जीवन - 19

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **पाण्डवों से :-** सभी पाण्डव शक्ति स्वरूप हो ना? शक्ति और पाण्डव कम्बाईन्ड हो? सर्वशक्तिवान के आगे शक्ति बन जाते और पार्ट बजाने मे पाण्डव। **सर्वशक्तिवान को शक्ति बन कर याद नहीं करेंगे तो मजा नहीं आयेगा।** आत्मा सीता है और वह राम है। तो इस पार्ट में भी बहुत मजा है। यही पार्ट सबसे वन्डरफुल है संगम का, जो पाण्डव शक्तियां बन जाती और शक्तियां भाई बन जाती। इससे सिद्ध होता है कि "देहभान भूल गये।" आत्मा में दोनों ही संस्कार हैं, कभी मेल का कभी फिमेल का पार्ट तो बजाया है ना। **संगम पर मजा है आशिक बन माशुक को याद करना।** शक्ति बनकर सर्वशक्तिवान को याद करना। सीता बनकर राम को याद करना। **(08-10-81)**

➢➢ स्त्री पुरुष के भान से मुक्त होने के लिए ड्रिल

➳ _ ➳ उल्टा चक्र चक्र चलाइए

→ स्वयं को कलयुग में और फिर द्वापर युग में देखिये

- *कभी मैं आत्मा पुरुष के शरीर में हूँ*
- *तो कभी मैं आत्मा स्त्री के शरीर में हूँ*

→ स्वयं को त्रेता में और फिर सतयुग में देखिये

- कभी मैं आत्मा देव के शरीर में हूँ
- तो कभी मैं आत्मा देवी के शरीर में हूँ

➳ _ ➳ आत्मा का कोई लिंग नहीं है

➢➢ तीन तरह से बाबा को याद करना है

➳ _ ➳ **शक्ति** बन **सर्वशक्तिमान** को याद करना

➳ _ ➳ **सीता** बन **राम** को याद करना

➳ _ ➳ **आशिक** बन **माशूक** को याद करना

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से:-** अपने को सदा **राजऋषि समझते हो? अधिकारी और ऋषि अर्थात् तपस्वी।** स्व का राज्य प्राप्त होने से स्वत: ही तपस्वी बन जाते हैं। क्योंकि **जब स्व का राज्य होता है तो स्वयं को आत्मा समझने से, बाप का बनने से, यही तपस्या हो जाती है।** आत्मा बाप की बनी अर्थात् तपस्वी बनी। तो राज्य भी और ऋषि भी। तो सभी स्वराज्य अधिकारी बने हो? **कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे, सदा बाप की तरफ आकर्षित रहें। किसी भी व्यक्ति व वस्तु की तरफ आकर्षण न जाये।** ऐसे राज्य अधिकारी तपस्वी कुमार हो? बिल्कुल विजयी।

➳ _ ➳ क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुगी है ना और साथ भी हंस और बगुलों का है। ऐसे वातावरण में रहते हुए स्वराज्यधारी होंगे तब सेफ रहेंगे। जरा भी दुनिया के वायब्रेशन की आकर्षण न हो।

➳ _ ➳ **कोई कम्पलेन नहीं, सदा कम्पलीट।** कुमारों की कम्पलेन्ट आती है? कुमार यदि विजयी बन जाएं तो सबसे महान हैं। क्योंकि गवर्मेन्ट भी यूथ को आगे बढ़ाती है। उसमें भी कुमार ज्यादा होते हैं। कुमार जो चाहें वह कर सकते हैं क्योंकि **शक्ति बहुत होती है। लेकिन शक्ति को व्यर्थ तो नहीं गंवाते हो। संकल्प और स्वप्न में बाप के सिवाए और कोई नहीं तब कहेंगे नम्बरवन कुमार।**

➳ _ ➳ **कुमार निर्विघ्न हो गये तो सबको निर्विघ्न बना सकते हैं। कुमारों का टाइटल ही है "विघ्न विनाशक"। किसी भी प्रकार का विघ्न, मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, किसी भी विघ्न के वशीभूत न हों। इसलिए बच्चों का ही टाइटल है - "विघ्न-विनाशक"।** गणेश बच्चा है ना। तो आपके यादगार में विघ्न-विनाशक नाम प्रसिद्ध है। प्रैक्टिकल बने हो तब यादगार बना है। **विघ्न-विनाशक बनने से स्वत: ही मंसा द्वारा भी सेवा होती रहेगी। वायुमण्डल भी निर्विघ्न बनता जायेगा। जैसे तत्वों से मौसम बदलती है वैसे विघ्न विनाशक बच्चों से वायुमण्डल बदल जायेगा। तो चारों ओर विघ्नविनाशक की लहर फैल जाए। सदा यही स्मृति में रखो कि - हमें विजयी वायुमण्डल बनाना है।** जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलता है, ऐसे ही शक्तिवान बनो।

➳ _ ➳ कुमारों को कोई न कोई काम जरुर चाहिए, कुमार अगर फ्री हुए ता खिटखिट हो जायेगी। कुमार बिजी रहे तो स्व का भी कल्याण, विश्व का भी कल्याण। तो विघ्नविनाशक बन वायुमण्डल बनाने में बिजी रहो। अपनी विशेषता को इस कार्य में लगाओ। **एक-एक कुमार अनेकों को संजीवनी बूटी देने वाले महाबीर अर्थात् मूर्छित को महावीर सुरजीत करने वाले हो। तो सदा अपना यह आक्युपेशन याद रखो।** जैसे लौकिक आक्युपेशन नहीं भूलता ऐसे यह अलौकिक आक्युपेशन भी सदा याद रहे। **संगमयुग पर बाप द्वारा जो भी टाइटल मिले हैं उनकी स्मृति में रहो। टाइटल याद आने से स्वत: ही ज्ञान और ज्ञानदाता दोनों की याद आ जायेंगी। (29-10-1981)**

➢➢ टाइटल्स

➳ _ ➳ **जो बाप के टाइटल्स हैं**

→ **वह बच्चों के स्वमान हैं**

➳ _ ➳ सभी इकट्ठे करें तो

→ एक छोटी सी Book बन जाए

➳ _ ➳ मनन करते करते

→ मगन अवस्था हो जायेगी

- स्वतः ही मोहब्बत के सागर में डूब जायेंगे
  - फिर मेहनत का अनुभव नहीं होगा
  - अंतर्मुखी बन जायेंगे
  - अनुभव के सागर में समा जायेंगे